23 – अप्रैल 2024
: 11 अंक : 21

MPHIN/2013/56155
ISSN NO. : 2454-9789

अर्धवार्षिक

अभिनव विमर्श

साहित्यिक शोध, विमर्श एवं नूतन संदर्भ पर आधारित

IMPACT FACTOR
6

PEER REVIEWED
JOURNAL

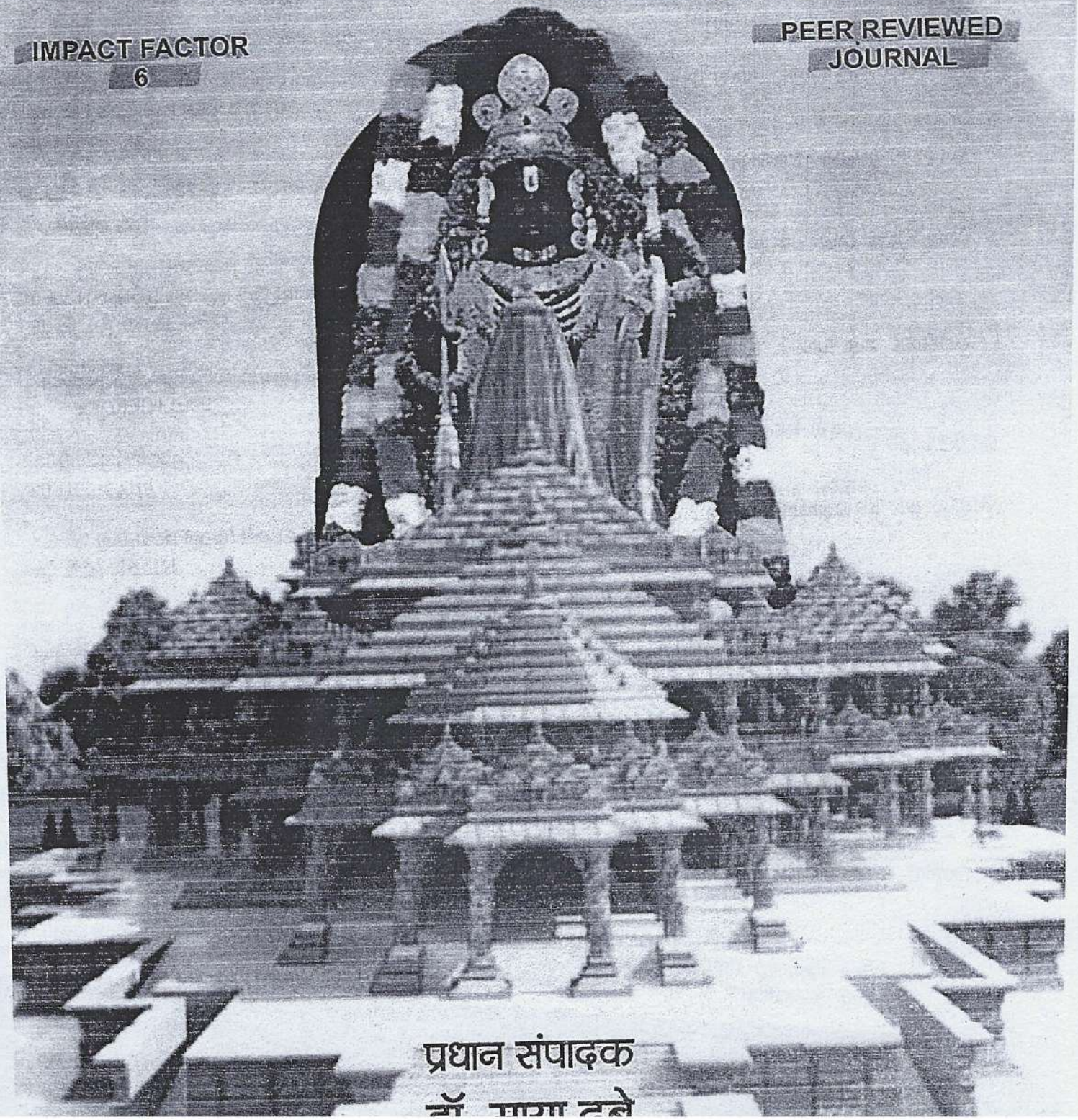

प्रधान संपादक

IMPACT FACTOR - 6
PEER REVIEWED JOURNAL
RNI - MPHIN/2013/56155
ISSN NO. : 2454-9789

अभिनव विमर्श

(साहित्यिक शोध, विमर्श एवं नूतन संदर्भ पर आधारित)
अर्द्ध वार्षिक - नवम्बर 2023 - अप्रैल 2024
वर्ष : 11 अंक - 21

प्रधान संपादक
डॉ. माया दुबे

सह संपादक
डॉ. खुशबू दुबे

प्रबंध संपादक
डॉ. अभिनव दुबे

सहायक संपादक
अरविन्द शर्मा

विषय विशेषज्ञ समिति

डॉ. वशिष्ठ अनूप
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. पवन अग्रवाल
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (हिन्दी) लखनऊ विश्वविद्यालय (उ.प्र.)

श्री तेजेन्द्र शर्मा
प्रवासी साहित्यकार

डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्रा
प्राध्यापक हिन्दी, साहित्यकार, लेखक एवं समीक्षक

डॉ. मालती वसन्त
प्राचार्य (सेवानिवृत) शासकीय हमीदिया क.उ.मा.वि. भोपाल
वरिष्ठ बाल साहित्यकार

डॉ. प्रतिभा सिंह
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (हिन्दी), एम.वी.एम. कॉलेज, भोपाल

डॉ. शोभना जैन
(प्रोफेसर हिन्दी), उच्च शिक्षा, म.प्र.

प्रो. विष्णु कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष (हिन्दी मण्डल)
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
अध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
शास. स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, मुरैना

परामर्श मण्डल

डॉ. गोविन्द जी पाण्डेय
विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ. अवधेश शुक्ला
प्रोफेसर (हिन्दी साहित्य) हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

डॉ. रेखा मिश्रा (संस्कृत)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. अशोक पाण्डेय
सेवानिवृत्त कार्यक्रम अधिकारी, दूरदर्शन केन्द्र, अहमदाबार (गुजरात)

डॉ. सुषमा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, नेशनल लॉ युनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

गोपाल कृष्ण पाण्डे
वरिष्ठ अधिवक्ता, विधिक सलाहकार, वाराणसी (उ.प्र.)

डॉ. अमित सिंह
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली

डॉ. शफीकुन्निसा खान
प्रोफेसर विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत), तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. माया दुबे द्वारा अभिव विमर्श के लिए एचआईजी 698, अरविन्द विहार, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित तथा प्रकाश प्रिंटर्स, जोन-1, एमपी नगर, भोपाल से मुद्रित। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।

ACT FACTOR - 6 PEER REVIEWED JOURNAL ISSN- 2494-9789

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्रमांक
	संपादक की कलम से		06
	शोध पत्र		
1.	आदिवासियों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक रीति रिवाज़	डॉ. ज्योति धनोतिया	7 –9
2.	पातंजलि योग दर्शन : प्राचीन आख्यान से नवीन व्याख्यान	डॉ. अखिलेश्वर मिश्र	10 – 11
3.	अद्वैत में प्रामाण्य–विचार	डॉ. अमित सिंह	12 – 16
4.	धर्मवीर भारती : ऐतिहासिक प्रतीकों के प्रणेता	डॉ. माया दुबे	17 – 19
5.	आधुनिक भारत में लोककला का भविष्य	शिवम गुप्ता	20 – 22
6.	जैव विविधता संरक्षण के लिए जम्भाणी का पारिस्थिकी दर्शन	डॉ. राखी शाह	23 – 28
7.	ज्ञान परम्परा में नीति शतक का योगदान	श्रीमती दुर्गेश लता भगत	29 – 31
8.	भारतीय ज्ञान परम्परा : कबीर की रचनाओं में ज्ञान परंपरा	मनोहर सिंह जामलिया	32– 34
9.	डॉ. हरिशरण वर्मा के नाटकों में भारतीय समाज में नारियों का तलाक के द्वारा शोषण	सुदेश / डॉ. मौसमी परिहार	35 – 37
10.	भारतीय संस्कृति और भगवद्गीता	डॉ. नीलिमा रंजन	38 – 40
11.	शिवानी की कहानियों में यथार्थ चित्रण	रेखा पाल / डॉ. मौसमी परिहार	41 – 42
	कहानी		
11.	का रे माई	डॉ. रामेश्वर मिश्र	43–46
12.	इंग्लिश रोज़	अरुणा सबरवाल	47–52
	कविताएँ / नज़्म / गीत		
13.	डॉ. माया दुबे की विभिन्न कविताएँ	डॉ. माया दुबे	15, 21, 31, 37, 41, 42
14.	अन्य कविताएँ	अरविन्द शर्मा	46, 52
15.	गीत	प्रो. वशिष्ठ अनूप,	54
16.	नज़्म	डॉ. प्रभा मिश्रा 'प्रज्ञा'	54
	स्थायी स्तंभ		
1.	कवि विमर्श – टूट गया नाता – श्री तेजेन्द्र शर्मा	डॉ. प्रभा मिश्रा 'प्रज्ञा'	53 – 54
2.	पुस्तक विमर्श – रास पंचाध्यायी प्रभा	श्री प्रभुदयाल मिश्र	55 – 56

आदिवासियों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाज और परस्पराएँ (झाबुआ एवं अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. ज्योति धनोतिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सारांश– भील भारतभूमि के आदिवासी समुदाय है। आदिवासी से आशय है कि आदिकाल से रहने वाला समुदाय। मध्य–प्रदेश में बीस से अधिक जिलों में भील समुदाय के लोग रहते हैं। झाबुआ एवं अलीराजपुर मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिले हैं। आदिवासियों (भीलों) के अपने अनेक धार्मिक और सांसतिक रीति–रिवाज और परंपराएँ होती हैं, जैसे– पिथौरा उत्सव, गातला, नौतरा, जातरा–पूजा, गल– घूमना, गाय–गोहरी पर्व, भगोरिया आदि। ये आदिवासी आज भी अपने रीति– रिवाज और संसति को अपनाएँ हुए हैं। वर्तमान में आधुनिकता की दौड़ में शिक्षित आदिवासी भले ही सारे रीति–रिवाज न निभाते हो, जैसा कि अन्य शिक्षित समुदाय के लोग नहीं निभाते। किंतु उनके रीति–रिवाजों और संसति को सहेजने, सुरक्षित करने की आज नितांत आवश्यकता है। उस समाज के बड़े–बूढ़े और सरकार अपना भरपूर प्रयास इसी दिशा में कर रहे हैं।

कुंजी– आदिवासी, बड़वा, पिथौरा, गातला, नौतरा, जातरा, गल, गाय– गोहरी, भगोरिया। भील भारतभूमि के आदिवासी समुदाय है। आदिवासी से आशय है कि आदिकाल से रहने वाला समुदाय। आदिकाल से लेकर आज तक जिस–जिस क्षेत्र में भील समुदाय के लोग निवास कर रहे हैं, वह क्षेत्र भारत के चार बड़े राज्यों में बड़े पैमाने पर फैला हुआ है। मध्य–प्रदेश में बीस से अधिक जिलों में भील समुदाय के लोग रहते हैं, जिसमें झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगोन, रतलाम प्रमुख हैं।

भील समुदाय के लोग मध्य–प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान आदि राज्यों में सदियों से प्रति–प्रदत्त जीवन–शैली के साथ आज भी निवास कर रहे हैं। इन्हीं राज्यों में भीलों के कई समुदाय भी रहते हैं, जिनके नाम हैं– बारेला, भिलाला तड़वी, बसावा, नायक, पटलिया, मानकर, मीणा आदि। इन सभी उप समुदायों के रीति–रिवाज़, परंपराएँ, संसति, कला, साहित्य आदि में बहुत साम्य है।

झाबुआ एवं अलीराजपुर मध्य–प्रदेश के आदिवासी बहुल जिले हैं। पश्चिमी मध्यप्रदेश में स्थित झाबुआ तथा अलीराजपुर गुजरात राज्य के दाहोद, राजस्थान राज्य के बांसवाड़ा और मध्यप्रदेश के धार एवं रतलाम जिलों से घिरे हैं।

16वीं शताब्दी में स्थापित जिला झाबुआ बहादुर सागर झील (स्थानीय स्तर पर इसे बड़ा तालाब कहा जाता है) के किनारे बसा हुआ है। यहाँ मुख्यतः भील और भील जनजाति की उपजातियाँ भिलाला और पटेलिया आदिवासी जातियों रहती हैं। (पूर्व में अलीराजपुर, झाबुआ जिले की एक तहसील थी, जो 2008 में झाबुआ से अलग होकर एक नया जिला बना।) भिलाला प्रायः अलीराजपुर जिले में ही पाए जाते हैं। भिलाले लंबे–चौड़े शरीर के, गोरे रंग और ऊँचे मस्तक वाले होते हैं।

मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला भील जनजाति का घर है, जिसे भारत के बहादुर धनुष पुरुषों के रूप में जाना जाता है। उत्तर में माही नदी के प्रवाह और दक्षिण में नर्मदा के बीच भूमि का टुकड़ा झाबुआ इस जनजाति के सांसतिक केंद्र का प्रतीक है। यह इंदौर से 150 किलोमीटर दूर है। इंदौर से इंदौर– अहमदाबाद राजमार्ग पर बसों द्वारा नियमित कनेक्टिविटी है। निकटतम रेलवे स्टेशन दिल्ली–मुंबई लाइन पर मेघनगर है, जो झाबुआ से 17 किलोमीटर दूर है।

आदिवासियों (भीलों) के अपने अनेक धार्मिक और सांसतिक रीति– रिवाज़ और परंपराएँ होती हैं। गाँवों में बसने वाला आदिवासी आज भी अपनी धार्मिक और सांसतिक परंपराओं का निर्वहन कर रहा है। नीम की दातुन और आपस में मिलने पर 'राम–राम' का

अभिवादन, इन्हें 'प्रति और भगवान राम से जोड़ता है।

झाबुआ एवं अलीराजपुर में आदिवासियों के अनेक पर्व, त्योहार और धार्मिक परंपराएँ हैं जो इस प्रकार है:–

1 पिथौरा–उत्सव :– सुख–शांति बनी रहे, कोई तकलीफ या परेशानी नहीं आएं, बाल–बच्चे स्वस्थ रहे, खेती–बाड़ी में लाभ हो, इन्हीं सब बातों के लिए 'पिथौरा– उत्सव' मनाया जाता है। 'पिथौरा बाबजी' दीवार पर बनाकर पूरी रात उनके गीत गाए जाते हैं। बडवा पूजा करता है। तडवी, पुजारा सभी होते हैं। मनौती मांगने पर, पूर्ण होने के उपरांत बाबा पिथौरा की स्थापना करते हैं और प्रतिवर्ष करते हैं। कहा जाता है कि पिथौरा बाबजी का नाम लेने से ही सारे काम बन जाते हैं। 'पिथौरा–उत्सव' में रात भर रामायण के चरित्र को भजन गायक के रूप में बड़वा वगैरह गाते हैं। यह संस्कृति है। पिथौरा बाबजी के पुतले दीवार पर बनाते हैं। वर्तमान में शासन–प्रशासन 'पिथौरा–संसति' को सहेज रहा है। जिला कलेक्टर कार्यालय झाबुआ और अलीराजपुर में 'पिथौरा बाबजी' दीवारों पर अंकित है–पिथौरा का चित्र पेंटिंग रूप में। झाबुआ की भूरीबाई, जिन्हें पद्म विभूषण प्राप्त हुआ है, वे पिथौरा कलाकार हैं, जो वर्तमान में भोपाल के भारत– भवन में कार्यरत है।

2. गातला :– जन्म–मृत्यु की अद्‌भुत कड़ी 'गातला' है। मृतक की स्मृति को जीवित रखने के लिए आदिवासी 'गातला' स्थापित करते हैं। ये स्मृति–चिन्ह 'गातला' कहलाते हैं। गाँव का मुखिया तड़वी प्रसिद्ध व्यक्ति की याद में, जिनकी आकस्मिक मृत्यु हो जाती है, गातला लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि आकस्मिक मृत्यु होने पर 'गातला लगाने' से आत्मा को मुक्ति मिल जाती है। 'गातला' पूर्वों को याद करने के लिए चपटे पत्थर पर दिवाली के पूर्व चौदस के दिन स्थापित करते हैं। पुरुषों के गातले सफेद पत्थर पर और स्त्रियों के 'गातले' काले पत्थर पर उकेरे जाते हैं। 'गातला पर उकेरे जाते हैं– घुडसवार राजा की तरह तथा सामने एक स्त्री कलश लिए खड़ी रहती है। 'गातला गाँव के बाहर सीमा पर या खेत पर लगाए जाते हैं। मृत्यु को भी उत्सव के रूप में मनाया जाता है– गातला के रूप में। कोई भी शुभ कार्य जैसे विवाह आदि कार्य 'गातला उत्सव' के बाद ही संपन्न होते हैं। यह प्रथा झाबुआ, धार, रतलाम, अलीराजपुर में निवासरत समस्त भील जनजाति में प्रचलित हैं।

3. नौतरा :– भीलों में 'नौतरा–प्रथा' एक अच्छी प्रथा, एक अच्छी परंपरा है। जिस घर में विवाह होता है, उस समय रिश्तेदार और पारिवारिक सदस्य आर्थिक सहायता हेतु पैसे/रुपए रखते हैं, जिससे विवाह अच्छे से संपन्न हो जाएँ, कोई आर्थिक कठिनाई नहीं आए, क्योंकि इनके पास कोई बचत तो होती नहीं। यह रुपया–पैसा विवाह के घर में रखना ही नौतरा है। जिसके यहाँ नौत्तरा रखा जाता है वह दूसरे के यहां विवाह में उससे अधिक 'नौतरा' (जिसे रुपये 1000 रखे, तो वह बढ़ाकर रु.1100 रखता हैं।) देता है।

4. जातरा–पूजा :– आदिवासियों की परंपरा का महत्वपूर्ण पर्व, महत्वपूर्ण उत्सव है– जातरा–पूजा। गाँव के वरिष्ठ बडवे, पटेल, सरपंच आदि इकट्ठा होते हैं। सावन–माता की पूजा होती है। फसलों, पशुओं, गायों और मनुष्यों को बीमारियों से बचाव के लिए यह पर्व मनाया जाता है। घर–घर से दूध मंगवाकर खीर बनाकर सावन–माता को भोग लगाकर सभी को बांटते हैं। ऐसा करने से गाँव की समस्याएँ दूर होती हैं। हरियाली माता की पूजा होती है।

5. गल घूमना :– आदिवासी समाज की यह अनोखी परंपरा और विश्वास है। बड़ी संख्या में लोग इसे देखने सम्मिलित होते हैं। मन्नतधारी व्यक्ति सपरिवार एवं रिश्तेदारों के साथ नाचते–गाते आते हैं। मन्नत पूरी होने पर बहुत ऊंचाई पर लकड़ी से बांधकर मन्नतधारी को गोल–गोल घुमाया जाता है। मन्नत धारी के शरीर पर हल्दी का लेप लगाकर नए वस्त्र पहनाए जाते हैं। गल–देवता के आस– पास स्त्रियों का समूह परंपरागत नृत्य करता है। बड़े–बड़े ढोल के साथ आदिवासी समूह में आते आते आते हैं। गल पुसते के बात पत्येक मन्चत पादरी बकरे की भाव घटाते हैं। नृत्य में इनकी जलती है। गल पुसते की ये पथरा प्रचलित है। होत्री से पहले यह ताल, बोल और मांदल की थाप देखते ही झाबुआओं और अलीराजपुर के आदिवासियों में उत्सव मनाया जाता है।

6. साथ गोहरी पर्व :– आदिवासी परंपरागत पर्न जाच गोहरी प्रतिवर्ष दीपावली के दूसरे दिन मनाया

जाता है। शाबुत शहर में सबसे यह आयोजन होता है। झाबुआओं में गोवर्धननाथ मंदिर के सामने दोपहर 400 बजे भाव मोहरी पर्व मनाया जाता है। शागों द्वारा मंदिर की सात बार परिक्रमा की जाती है। ये गाने आदिवासी किसान की होती हैं। जिन्हें खूब सुंदर सजाया जाता है। पूरे शरीर पर रंग–बिरंगी छाप लगाई जाती है। सींगों पर मोरपंख बाँधे जाते हैं। आतिनासी किसान गाओं द्वारा मंदिर की परिक्रमा के समय उनके सामने जमीन पर आंधे लेट जाते हैं और गाने उनके ऊपर से गुजर जाती हैं, किंतु उन्हें कुछ नहीं होता।

इस पर्व को देखने दूर–दूर से लोग आते हैं। आकर्षक पर्वो की सूची में प्रमुखता से गाय–गौहरी पर्व का अपना एक अलग ही स्थान है। गाय मानि जगत की पालनहार और गौहरी का सीधा अर्थ है ना। गाय व ग्वाले के आत्मीय संबंध की ही 'गाय–गौहरी' पर्व पर अभिव्यक्ति होती है। गोवर्धन पूजा के दिन गायों का विशेष अंगार करना, फिर उन्हें सज–धजाकर श्री अकुर जी के दरबार में लाना, गोवर्धननाथ मंदिर की सात परिक्रमा, मन्नतधारियों का नार्थों के झुंड के आगे लेटना और गौमाता की वर्षभर देखभाल करने वाले वालों का सार्वजनिक सम्मान एवं गोवर्धननाथ की धूमधाम से पूजा–अर्थना ही नाच–गौहरी पर्व मनाने के तरीके हैं। इसमे संस्ति का पदर्शन भी सहज रूप से होता है। इस दौरान बही संख्या में जनता स्थानीय गोवर्धननाथ मंदिर पर एकत्रित होती है। पटाखों के जरिए गायों को भहकाया जाता है। झाबुआ जिले के 30 स्थानों पर यह पर्व मनाया जाता है।

7. भगोरिया :– होली के पूर्व आदिवासी समाज दद्वारा मनाया जाने वाला परंपरागत लोक उत्सव भगोरिया होली के सप्ताह भर पहले झाबुआ, अलीराजपुर धार बडवानी, खरगोन में हाट बाजार से आरंभ हो जाता है। मेले लगते हैं। प्रणय– पर्व भगोरिया आदिवासियों का वसंतोत्सव पर्व है। समूह के समूह आदिवासी इस त्यौहार को मनाने ढोल और माँदल की थाप पर थिरकते, अपनी मौज में रंगे, होली के मदनोत्सव में एकत्रित होते हैं। कोई–कोई ताड़ी के मद में मस्त होता है। भगोरिया पर्व में नाचते–गाते, बाँसुरी के सुर छोड़ते ये आदिवासी समूह रंग–बिरंगे पारंपरिक परिधान पहने हाट–बाजार में आते हैं तो सबका मन मोह लेते हैं। मस्ती का गुलाल उड़ता है। मेला अपने पूरे शबाब पर होता है। अलीराजपुर के वालपुर का भगोरिया प्रसिद्ध है और देश–विदेश से पर्यटक देखने और अपने कैमरे में कैद करने प्रतिवर्ष आते है। इस साल का भगोरिया उत्सव झाबुआ मुख्यालय पर मैंने भी सपरिवार मनाया (मार्च 2021)। भगोरिया आदिवासियों का प्रणय–पर्व भी है। विवाह योग्य युवक्–युवती एक–दूसरे को पसंद करते हैं। युवक यदि युवती को पान का बीड़ा देता है और युवती उसे स्वीकार कर लेती है तो युवक युवती को भगा ले जाता हैं। लड़के वाले वधू–मूल्य चुकाते हैं, तभी विवाह की अनुमति मिलती हैं। युवतियाँ पान खाकर अपने होठ लाल करती हैं।

भगोर नामक स्थान के कारण भगोरिया पर्व नाम पड़ा अथवा लड़की को भगाकर विवाह करने के कारण भगोरिया नाम पड़ा, इस विषय में मतभेद हो सकते हैं। भगोरिया पर्व में आबाल, वृद्ध, युवा एवं महिलाएँ पूरे उल्लास, उमंग एवं जीवंतता से शामिल होते हैं। वृद्ध तो प्रत्येक बार अपना आखिरी भगोरिया समझकर शामिल होते हैं। प्रति के रंग में रंगकर यानि प्रति के वसंतोत्सव में शामिल होते हैं अर्थात् वसंत में प्रति के खिले रंगों के साथ मस्ती में झूमकर ये भगोरिया पर्व मनाते हैं। शाम को 'गैर' (समूह) निकाली जाती हैं और ये समूह अपने–अपने गाँवों की ओर लौट जाते हैं।

इस प्रकार झाबुआ एवं अलीराजपुर के आदिवासियों की अपनी जीवन–शैली, अपनी सामाजिक धार्मिक परम्पराएँ, रीति–रिवाज हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं, किन्तु शिक्षित समुदाय इनरी दूर होता जा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इनके रीति–रिवाज, धार्मिक परंपराओं को सहेजा जाएँ एवं इन्हें संरक्षित किया जाए।

संदर्भ–सूची

1. समाजशास्त्र – डॉ. डी. एस. बघेल एवं डॉ किरण बघेल, संस्करण 2016 प्रकाशक–कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
2. नईदुनिया समाचार–पत्र।
3. jhabua-nic-in ,पर्यटन